STUDY MATERIAL FOR U. G. SEM VI {SANSKRIT}

BY DR. D.K. MISHRA, S.P. COLLEGE DUMKA

SIDO KANHU MURMU UNIVERSITY DUMKA, JHARKHAND

STUDY MATERIAL FOR U. G. SEM VI {SANSKRIT}

(पाठ्यांश – बाणभट्ट की कादम्बरी अन्तर्गत शुकनासोपदेश प्रथम)

By: Dr. D. K. Mishra

प्र0:– बाण की गद्य शैली का निरूपण करते हुए उनके वैशिष्ट्य का प्रतिपादन करें।

अथवा

''बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्'' – उक्ति की समीक्षा करें।

उ0:– अपनी अपूर्व काव्य–प्रतिभा के कारण पावन भागीरथी सलिल प्रवाह की भाँति सतत–प्रवाह संस्कृत साहित्य में सर्वत्र अपनी अतुलनीय रसराग, पराग सौरभ से अपनी ओर आकृष्ट कर हृदय को सरलतम सूक्तियों से आनन्दित करने वालों में सर्वश्रेष्ठ सुरभारती के वक्ष–स्थल पर नक्षत्रों की मणिमाला में ध्रुवतारा की भाँति सदैव नियत स्थान पर समारूढ़ होकर अपनी अप्रतिम प्रतिभा से चकाचौंध करने वाले सुकवि, तुरङ्गबाण, समन्वयवादी, उत्पादक, वाग्देवतावतार, वाणी के अवतार आदि उपाधियों से विभूषित उपन्यास सम्राट के पद पर आसीन महाकवि बाणभट्ट एक सफल कथाकार हीं नहीं श्रेष्ठ आख्यायिकार भी हैं।

महाकवि की रचनाओं में हर्षचरितम् और कादम्बरी प्रामाणिक हैं। चण्डीशतकम्, पार्वतीपरिणय, मुकुटताडितक, रत्नावली आदि भी बाणभट्ट की हीं रचना है ऐसा अनेक विद्वान् मानते हैं। 'हर्षचरितम्' एक आख्यायिका है जबकि 'कादम्बरी' कथा।

''आख्यायिकोपलब्धार्था'' के अनुसार हम कह सकते हैं कि आख्यायिका की कथा सत्यार्थ पर आधारित होती है। कहा भी गया है –

''गद्यं तु कथितं द्विधा कथेत्याख्यायिकेति च।
कथा कल्पित–वृत्तान्ता सत्यार्थाख्यायिका मता।।''

अर्थात् गद्य के दो भेद हैं – कथा और आख्यायिका। कल्पित वृतान्त होने से कथा और सत्यार्थ वृत्तान्त से आख्यायिका कहे जाते हैं। बाण ने स्वयं – ''करोम्याख्यायिकाम्भोधौ जिह्वाप्लवनचापलम्'' लिखकर हर्षचरितम् को आख्यायिका तथा – ''धिया निबद्धेयमतिद्वयीकथा'' लिखकर करदम्बरी को कथा कहा है। बाणभट्ट की दोनों रचनाएँ अत्यन्त रोचक एवं कालजयी हैं। इनकी अपूर्व विशेषताओं को देखकर आलोचकों ने कह दिया – बाण ने सारे जगत् को जूठा कर दिया अर्थात् यह जगत् बाण का जूठन मात्र है – ''बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्।''

संस्कृत साहित्य के गद्य काव्य प्रणेताओं में बाणभट्ट निर्विवाद रूप से सर्वश्रेष्ठ हैं। गद्य हमारे साधारण क्रियात्मक जीवन का प्रतिबिम्ब होता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी बारीकियों से परिचित होता है, अतः श्रेष्ठ गद्य–काव्य लिखना आसान नहीं है। इसलिए आचार्यों की यह उक्ति यथार्थ है कि गद्य–काव्य में हीं कवियों की परीक्षा होती है, गद्य उनकी कसौटी है – ''गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति।'' गद्य यदि कवियों की कसौटी है तो इस कयौटी पर बाणभट्ट सबसे अधिक खरे उतरे हैं।

बाणभट्ट की सफलता का राज उनकी अनुपम भावाभिव्यक्ति एवं कल्पना कौशल, अद्वितीय रचनाशैली और ललितपदविन्यास में अन्तर्निहित है। कहा जाता है कि बाणभट्ट सरस्वती के अवतार थे – ''बाणी बाणो बभूव।'' बाण की कविता तरूणी के लावण्य की तरह है जो नित नूतन रहती है और जिसका सौन्दर्य क्षण–क्षण दर्शक एवं पाठक को अपनी ओर आकृष्ट करता है –

''रूचिरस्वरवर्णपदा रसभाववती जगन्मनो हरन्ति।
तत्किं तरूणी? नहि नहि वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य।।''

बाणभट्ट की सुमधुर भारती में वीणा की मधुर झंकार सुनाई देती है। कहा भी गया है –

''वाणीपाणिपरामृष्टवीणानिक्वाणहारिणीम्।
भावयन्ति कथं वान्ये भट्टबाणस्य भारतीम्।।''

बाणभट्ट असाधारण प्रतिभाशाली गद्य लेखक हैं। उनकी सर्वतोव्यापिनी प्रतिभा, कल्पना–कौशल और रचना चातुरी को देखने पर यह कथन सर्वप्रसिद्ध है कि – ''बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्।'' गद्य काव्य संसार बाणभट्ट की उच्छिष्ट प्रतिभा एवं कल्पनाओं के सहारे जीवित है। परवर्ती जितने भी गद्यकार हुए हैं उनपर बाणभट्ट का स्पष्ट प्रभाव है।

सानुप्रास समासान्त पदावली, अपरिमित शब्दभण्डार, प्रकृति के व्यापक और मनोहारी चित्र, कोमल और भीषण कल्पना, मानवीय मनोवृत्तियों की सूक्ष्म एवं हृदयग्राही परिकल्पना आदि के दर्शन बाणभट्ट की रचनाओं में मिलते हैं। गद्य काव्य की समस्त विशेषताएँ बाणभट्ट के काव्यों में एक साथ दृष्टिगोचर होते हैं।

रमणीय प्रणय चित्रों, नख शिख वर्णन, प्राकृतिक दृश्यों के अंकन में बाणभट्ट अनुपम कलाकार सिद्ध होते हैं। संयोग और वियोग दोनों ही प्रकार के भावों का सफल अंकन इनके काव्य में हुआ है। बाणभट्ट ने न केवल स्त्रियों के नखशिख का वर्णन किया है अपितु पुरूषाकृति के सौन्दर्याङ्कन में भी अनुपम कला का प्रदर्शन किया है।

'हर्षचरितम्' के पाठ्यांश प्रथम उच्छ्वास के आधार पर भी 'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्' यह उक्ति सटीक बैठती है। ग्रन्थारम्भ, काव्यस्वरूप भेद, ब्रह्मा जी की गोष्ठी में विवाद, सरस्वती रूप वर्णन, दुर्वासा कोप, सावित्री वर्णन, दुर्वासा शाप, ब्रह्मा द्वारा दुर्वासा की भर्त्सना,

सन्ध्या वर्णन, रात्रि वर्णन, चन्द्रोदय वर्णन, मन्दाकिनी वर्णन, शोणनद वर्णन, सरस्वती का घुड़सवारों के समूह दर्शन–वर्णन, दधीचि विकुक्षि–वर्णन, मालती वर्णन, सरस्वती उत्कण्ठा, दधीचि का सारस्वत पुत्र को अक्षमाला को सौंपना आदि ऐसे वर्णन हैं जहाँ बाण ने अपनी मौलिक विशेषताओं को अपनाकर पाठकों, आलोचकों को हतप्रभ कर दिया है।

प्रचलित स्वभावोक्ति के अतिरिक्त वक्रोक्ति का नया मार्ग बाण की ही देन है। वक्रोक्ति में श्लेषमयी शैली कवि की मौलिक विशेषता है। समन्वयवादी दृष्टिकोण अपनाना तथा स्वयं नए मार्ग पर चलना कवि की प्रतिभा को प्रदर्शित करता है। बाण के हीं शब्दों में –

''श्लेषप्रायमुदीच्येषु प्रतीच्येष्वर्थमात्रकम्।
उत्प्रेक्षा दाक्षिणात्येषु गौडेष्वक्षरडम्बरम्।।''

बाण ने समस्त शैलियों का समन्वय अपने काव्य में किया है। विषय की नवीनता, सुन्दर लगने वाली स्वाभावोक्ति, श्लेष जिसमें क्लिष्टता न हो, स्फुट रस आदि का समन्वय बाण के काव्य में मिलता है –

''नवोऽर्थोजातिरग्राम्या श्लेषः स्पष्टः स्फुटो रसः।
विकटाक्षरबन्धश्च कृत्स्नमेकत्र दुर्लभम्।।''

इस दुर्लभता को कवि ने अपने 'हर्षचरितम्' में सुलभ बना दिया है। बाणभट्ट ने अपने काव्य में लम्बे–लम्बे समासों वाली 'उत्कलिका' शैली, छोटे–छोटे समासों वाली 'चूर्णक' शैली तथा समास रहित 'आबिद्ध' शैली को अपने काव्य में अपनाकर शैली में भी समन्वय स्थापित किया है।

दधीचिवर्णन, ग्रीष्मवर्णन आदि में कवि की उत्कलिका स्पष्ट दीखती है। वर्णन करते–करते शास्त्रीय उपदेश भी करने की प्रवृत्ति बाण के साहित्य में जगह–जगह मिलती है। बाणभट्ट की रीति 'पांचाली' है। विषय के अनुरूप शब्दावली का प्रयोग ही पांचाली रीति होती है। बाणभट्ट इसके सिद्धहस्त कलाकार हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि बाणभट्ट की रचनाएँ अद्वितीय एवं अनुपम हैं। बाण ने संस्कृत गद्य साहित्य के क्षेत्र में जो स्थान प्राप्त किया है वह आसानी से हासिल नहीं हो सकता। काव्यगत विशेषताओं से पूर्ण इनकी रचनाएँ सार्वदेशिक और सार्वकालिक हो गई हैं। अतः यह उक्ति अक्षरशः सत्य है कि – ''बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्।''

बाण के अलंकार का कुशलप्रयोग, प्रकृतिवर्णन की सूक्ष्मता, औचित्य, चित्रोपमता का जमकर अनुकरण परवर्ती कवियों ने किया है। शैली की विविधता, ज्ञान का भण्डार, कल्पना, अलंकार सबकुछ बाद के कवियों ने बाणभट्ट से हीं लिया है, ऐसा लगता है। अतः यह उक्ति कि बाण का जूठन हीं समस्त संसार है, अक्षरशः सत्य है। इसमें किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए कि –''बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्।''

****

*प्र0:– **बाणभट्ट के व्यक्तित्त्व और कृतित्व पर संक्षेप में प्रकाश डालें।***

उ0:– संस्कृत गद्य–साहित्य में सर्वाधिक प्रतिभाशाली गद्यकार 'बाण' हैं। बाणभट्ट ने परम्परा से हटकर अपनी रचना में अपना पूर्ण परिचय दिया है। बाणभट्ट हर्षवर्द्धन के दरबार में रहते थे। अतः बाण का समय वही है जो इतिहास में हर्षवर्द्धन का अर्थात् 607ई0 से 648ई0।

बाणभट्ट वात्स्यायन–गोत्रीय ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम चित्रभानु था। विद्वान् परिवार में जन्म लेने के कारण इन्होंने सभी विद्याओं का अभ्यास किया। बचपन में हीं अनाथ हो गए बाणभट्ट ने युवावस्था में मित्रों की मण्डली बनाकर पर्याप्त देशाटन किया। अनुभव सम्पन्न होकर अपने ग्राम 'प्रीतिकूट',शोण के तट पर लौटे। राजा हर्षवर्द्धन के बुलावे पर यह उनके दरबार में गए और उनकी कृपा से वहीं रहने लगे।

बाणभट्ट ने दो गद्य–काव्यों की रचना की – हर्षचरितम् और कादम्बरी। हर्षचरितम् एक आख्यायिका है। यह आठ उच्छ्वासों में विभक्त है। प्रारंभिक दो – तीन उच्छ्वासों में बाण ने अपने वंश का एवं अपना परिचय दिया है। इसके बद राजा हर्षवर्द्धन के पूर्वजों का वर्णन किया है। पुनः प्रभाकरवर्द्धन, राज्यवर्द्धन, हर्षवर्द्धन तथा राज्यश्री इन तीन भाई–बहन के जन्म का भी रोचक वृत्तान्त दिया है। प्रभाकरवर्द्धन की मृत्यु , राज्यश्री का विधवा होना, राज्यवर्द्धन की हत्या, राज्यश्री का विन्ध्याटवी में पलायन, हर्षवर्द्धन द्वारा उसकी रक्षा – ये सभी घटनाएँ क्रमशः वर्णित हैं। दिवाकर मित्र नामक बौद्ध संन्यासी के आश्रम में हर्षवर्द्धन व्रत लेता है कि दिग्विजय के बाद वह बौद्ध हो जाएगा। यहीं हर्षचरितम् की कथानक समाप्त हो जाता है।

विस्तृत–वर्णन सजीव–संवाद, सुन्दर–उपमाएँ, झंकार करती शब्दावली तथा रसों की स्पष्ट अभिव्यक्ति –ये सारी बातें बाण की गद्य शैली में प्रचूरता से मिलती है। कहीं आनन्द आौर उल्लास का सजीव वर्णन है तो कहीं मृत्यु का अत्यन्त मार्मिक रूप वर्णित है।

बाणभट्ट की दूसरी रचना कादम्बरी है। यह कवि–कल्पित कथानक पर आश्रित होने के कारण कथा नामक गद्य–काव्य है। इसमें अध्याय या उच्छ्वास आदि में विभाजन नहीं है। पूरी कथा का पचहत्तर प्रतिशत भाग हीं बाणभट्ट ने लिखा है शेष उनके पुत्र ने पूरा किया है। काव्यशास्त्र के सभी उपादानों रस, अलंकार, गुण, रीति आदि का औचित्यपूर्ण प्रयोग करने के कारण कादम्बरी बाण की उतकृष्ट गद्य रचना है। विषय की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए वर्णन–शैली अपनाई गई है। इसे पाञ्चाली शैली कहा जाता है जिसमें शब्द और अर्थ का

समान गुम्फन है। पात्रों का सजीव निरूपण है। रस का समुचित परिपाक हुआ है। मानव जीवन के सभी पक्षों को दर्शाया गया है। आलोचकों ने मुक्त कण्ठ से इसकी प्रशंसा की है तथा कह दिया है कि बाण ने पूरे संसार को जूठा कर दिया है– **''बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्।''** उनके वर्णन से कुछ भी बचा नही है।

निःसंदेह बाणभट्ट का हर्षचरितम् एवं कादम्बरी संस्कृत गद्य साहित्य के दो गगनचुम्बी ईमारत हैं जिसके शिखर तक पहुँचना आसान नहीं है।

****